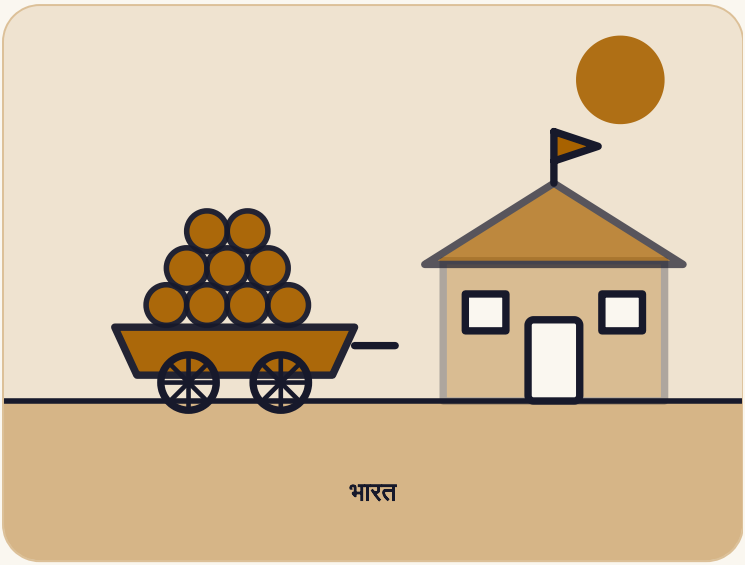

भारत

संतरे बेचने वाला जिसने स्कूल बनाया

कर्नाटक के एक फल-विक्रेता ने, जिनके पास कोई औपचारिक शिक्षा नहीं थी, एक-एक बचत जोड़कर अपने गाँव के लिए स्कूल बनाया।

कहाँ मंगलुरु

कौन हरेकला हजब्बा, कर्नाटक के मंगलुरु के एक संतरा विक्रेता

कब 1990 से 2021

4 मिनट में पढ़ें

पहला अध्याय

कहानी

हरेकला हजब्बा भारत के कर्नाटक राज्य के शहर मंगलुरु की सड़कों पर संतरे बेचते थे। उनके पास कोई औपचारिक शिक्षा नहीं थी। वे ग़रीबी में पले, और सिर्फ़ दो स्थानीय भाषाएँ जानते थे, तुलु और ब्यारी।

1990 में, बस डिपो पर जहाँ वे संतरे बेचते थे, एक विदेशी ने उनसे एक संतरे का दाम पूछा। हजब्बा सवाल समझ नहीं पाए।

> मैं चाहता था कि मेरे गाँव के बच्चे पढ़ें।
>
> हरेकला हजब्बा, ThePrint से

एक स्कूल, क़दम-क़दम

उनके गाँव न्यूपडपु में कोई स्कूल नहीं था। सबसे नज़दीकी स्कूल 7 किमी दूर था। दो साल तक हजब्बा स्थानीय नेताओं से मदद माँगते रहे, और अपनी कमाई का कुछ हिस्सा बचाते रहे। *Deccan Herald* के अनुसार वे रोज़ लगभग ₹150 अलग रखते थे।

2000 में एक स्थानीय नेता ने एक मस्जिद की स्कूल-इमारत में 28 बच्चों के लिए एक कक्षा शुरू करवाई। एक संस्था ने पहला शिक्षक दिया। हजब्बा कमरे बुहारते और बच्चों के लिए पीने का पानी उबालते।

फिर उन्होंने अपनी बचत और दानदाताओं की मदद से ज़मीन ख़रीदी। उसे उन्होंने एक पक्के स्कूल के लिए सरकार को दे दिया। 2001 में कक्षा 1 से 5 के लिए एक इमारत खुली।

28
2000 में पहली कक्षा में बच्चे

7 किमी
उससे पहले सबसे नज़दीकी स्कूल की दूरी

2012
वह साल जब हाई स्कूल की इमारत खुली

स्कूल बढ़ता गया। 2005 में कक्षा 6 शुरू हुई। 2010 तक उसके पहले कक्षा 10 के छात्रों ने स्कूल की अंतिम परीक्षा दी। हजब्बा ने और ज़मीन ख़रीदी, और 2012 में हाई स्कूल की इमारत खुली।

यह मेरा पुरस्कार नहीं है

2020 में भारत ने हजब्बा को पद्मश्री, अपने सर्वोच्च सम्मानों में से एक, के लिए चुना। उन्हें यह नवंबर 2021 में मिला। वे नंगे पाँव उसे लेने पहुँचे।

उन्होंने श्रेय लेने से मना कर दिया। “यह मेरा पुरस्कार नहीं है। यह स्कूल के लिए है,” उन्होंने कहा। उन्होंने कहा कि सैकड़ों उदार दानदाताओं और सरकार ने इसे संभव बनाया।

लोग अब उन्हें ‘अक्षर संत’, यानी अक्षरों का संत, कहते हैं। *Deccan Herald* के अनुसार उनकी जीवन-कथा तीन विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम का हिस्सा है।

फिर भी उन्होंने और माँगा। कई बच्चे कक्षा 10 के बाद पढ़ाई छोड़ देते हैं, क्योंकि अगला स्कूल दूर है। हजब्बा को हरेकला में बड़े विद्यार्थियों के लिए एक कॉलेज की उम्मीद है।

कब क्या हुआ

- **1990** एक विदेशी संतरे का दाम पूछता है। हजब्बा समझ नहीं पाते।
- **2000** एक मस्जिद की स्कूल-इमारत में 28 बच्चों के लिए पहली कक्षा शुरू होती है।
- **2001** कक्षा 1 से 5 के लिए स्कूल की इमारत खुलती है।
- **2012** हाई स्कूल की इमारत खुलती है।
- **2021** हजब्बा को पद्मश्री मिलता है, जिसकी घोषणा 2020 में हुई थी।

दूसरा अध्याय

यह कहानी ख़ास क्यों है

शर्मिंदगी का एक पल एक स्कूल बन गया, क्योंकि एक आदमी ने उसे भूलने से इनकार कर दिया।

हजब्बा ने यह अकेले नहीं किया, और यह उन्होंने ख़ुद कहा। शायद इसीलिए इतने लोगों ने मदद की।

हमारी राय

छोटी, नियमित बचत और साफ़ उद्देश्य कुछ बड़ा खड़ा कर सकते हैं।

तीसरा अध्याय

हम क्या सीख सकते हैं

1 शर्म को उद्देश्य में बदलिए

जो सवाल वे समझ नहीं पाए, उसी ने उन्हें स्कूल बनाने की ओर धकेला।

यह आज़माएँ: जब कुछ चुभे, तो पूछिए कि उससे आप क्या बना सकते हैं।

2 थोड़ा-थोड़ा, लगातार बचाइए

उन्होंने सालों तक अपनी छोटी कमाई का हिस्सा अलग रखा।

यह आज़माएँ: नियमित छोटी बचत एक बड़े लक्ष्य को पूरा कर सकती है।

3 कई लोगों से मदद माँगिए

दानदाताओं, एक नेता, एक संस्था और सरकार, सबने मदद की।

यह आज़माएँ: मदद माँगिए, और श्रेय बाँटिए।

4 लक्ष्य को बढ़ाते रहिए

वे एक कक्षा से हाई स्कूल तक पहुँचे, और अब कॉलेज माँगते हैं।

यह आज़माएँ: एक लक्ष्य पूरा हो तो अगला क़दम खोजिए।

साथ ले जाने वाली एक बात

एक स्कूल उस इंसान से शुरू हो सकता है जो एक सवाल को भूलने से इनकार कर दे।

स्रोत (अंग्रेज़ी में)

ThePrint
For Harekala Hajabba, journey from orange cart to Padma Shri began with a foreigner's question

Deccan Herald
As Hajabba receives Padma Shri, kids rejoice at his school

The News Minute
Harekala Hajabba, Karnataka fruit seller who started school, receives Padma Shri

तथ्य-जाँच नोट: स्रोत मुख्य कहानी पर सहमत हैं और तारीख़ों व ब्योरों में अलग हैं। विदेशी का सवाल: ThePrint इसे 1990 का बताता है, बस डिपो पर (2021 में "31 साल पहले"); The Better India कहता है "लगभग दो दशक पहले" और कहता है कि पर्यटकों के एक जोड़े ने अंग्रेज़ी में पूछा था; Wikipedia सिर्फ़ "बहुत साल पहले" और एक विदेशी पर्यटक का अंग्रेज़ी में पूछना कहता है; कहानी ThePrint का 1990 लेती है और सिर्फ़ "एक विदेशी" कहती है, भाषा नहीं बताती। उनकी स्कूली पढ़ाई: ThePrint, The News Minute और The Better India कहते हैं कि उनके पास कोई औपचारिक शिक्षा नहीं थी; Wikipedia कहता है कि उन्होंने जल्दी स्कूल छोड़ दिया; कहानी कहती है कोई औपचारिक शिक्षा नहीं। स्कूल कब शुरू हुआ: Deccan Herald कहता है कि उन्होंने 1999 में स्कूल बनाया; ThePrint 17 जून 2000 को वह दिन बताता है जब एक मस्जिद के मदरसा-भवन में पहली कक्षा शुरू हुई, जिसे स्थानीय विधायक ने 28 विद्यार्थियों के लिए शुरू करवाया, और पहला शिक्षक धर्मस्थल ग्रामीण विकास परियोजना से था; कहानी 2000 और 28 बच्चे लेती है, जो Deccan Herald भी स्कूल की शुरुआत के लिए देता है। 7 किमी की दूरी, नेताओं से दो साल तक माँगना, कक्षा 1 से 5 के लिए 2001 की इमारत, 2005 में

कक्षा 6, 2010 में कक्षा 10 के पहले छात्र, अतिरिक्त ज़मीन और 14 जून 2012 को उद्घाटित हाई स्कूल की इमारत (प्रधानाध्यापक लक्ष्मण पुडुवल) ThePrint से हैं। The News Minute कहता है कि 2008 में न्यूपडुपु में एक सरकारी उच्च प्राथमिक स्कूल बना और हजब्बा परिसर में झाड़ू लगाते और बच्चों के लिए पानी उबालते थे; 2008 की तारीख़ ThePrint की समय-रेखा से मेल नहीं खाती, इसलिए कहानी उसे इस्तेमाल नहीं करती। बचत: Deccan Herald इसे “Rs 150 प्रतिदिन की मामूली बचत” कहता है; ThePrint कहता है कि जो भी बचा सके वे बचाते थे; साफ़ नहीं है कि ₹150 उनकी रोज़ की कमाई है या रोज़ की बचत, इसलिए कहानी कहती है “रोज़ लगभग ₹150 अलग रखे” और स्रोत बताती है। हजब्बा का उद्धरण और “यह मेरा पुरस्कार नहीं है। यह स्कूल के लिए है” ThePrint से हैं; नंगे पाँव चलना Deccan Herald और ThePrint से है। पद्मश्री जनवरी 2020 में घोषित हुआ और 8 नवंबर 2021 को प्रदान किया गया (The News Minute, Deccan Herald); कहानी देरी का कोई कारण नहीं देती। हरेकला में कॉलेज का उनका अनुरोध Deccan Herald से है; कि कई बच्चे कक्षा 10 के बाद पढ़ाई छोड़ देते हैं क्योंकि उच्च संस्थान शहर में हैं, यह The News Minute से है। Deccan Herald यह भी कहता है कि उनकी जीवन-कथा तीन विश्वविद्यालयों (दावणगेरे, कुवेम्पु और मंगलूर) के पाठ्यक्रम में है और वे ‘अक्षर संत’, यानी अक्षरों के संत, के नाम से जाने जाते हैं; कहानी दोनों लेती है और पहले का स्रोत बताती है। YourStory नहीं खुल सका (403)। पिन मंगलुरु दिखाता है। “हमारी राय” वाली पंक्तियाँ हमारी अपनी व्याख्या हैं। बाकी सब ऊपर दिए स्रोतों से है।